International Journal of Multidisciplinary Trends

E-ISSN: 2709-9369
P-ISSN: 2709-9350
www.multisubjectjournal.com
IJMT 2023; 5(7): 44-46
Received: 01-05-2023
Accepted: 05-06-2023

वंदना कुमारी
शोध–छात्रा, स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोध गया, बिहार, भारत

डॉ. आनन्द कुमार सिंह
शोध–निर्देशक, स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोध गया, बिहार, भारत

Corresponding Author:
वंदना कुमारी
शोध–छात्रा, स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग, मगध विश्वविद्यालय, बोध गया, बिहार, भारत

मध्यवर्गीय पारिवारिक जीवन–मूल्य और अमरकांत के उपन्यास

वंदना कुमारी, डॉ. आनन्द कुमार सिंह

सारांश
साहित्य की विविध विधाओं में उपन्यास का एक विशिष्ट महत्त्व है। सामाजिक युगबोध की सबसे सफल अभिव्यक्ति उपन्यास साहित्य में ही संभव होती है। इसी के माध्यम से मानव जीवन के विविध पक्ष, पात्रों की जटिलता, परिवेश एवं संवाद इत्यादि साकार होते हैं। प्रख्यात साहित्यकार डॉ. त्रिभुवन सिंह के अनुसार : ''साहित्यिक क्षेत्र में उपन्यास ही एक ऐसा उपकरण है, जिसके द्वारा सामूहिक मानव जीवन अपनी समस्त भावनाओं एवं चिंताओं के साथ संपूर्ण रूप में अभिव्यक्त हो सकता है। मानव जीवन के विविध चित्रों को चित्रित करने का जितना अधिक अवकाश उपन्यास में मिलता है उतना अन्य किसी साहित्यिक विधा में नहीं।''[1]

उपन्यास का सृजन चरित्र–चित्रण के विना संभव नहीं होता। इसमें मानव जीवन के विविध पक्षों को चित्रित किया जाता है। इसके माध्यम से ही लेखक पात्रों की व्यक्तिगत तथा न्यारी विशेषताओं को प्रकाश में लाता है। अमरकान्त ने अपने उपन्यासों के माध्यम से मध्यवर्गीय समाज के चरित्र का रेशा रेशा समझाने की कोशिश की है। इन्होंने ऐसे पात्र सृजित किये हैं, जो जीवनेच्छा से भरपूर, भावनाओं से संपन्न और सूझ–बूझ के धनी होते हुए भी इतने झकझोरे, आहत, असंतुलित और असंतृप्त हैं कि हर जगह शून्य पर विस्तार पाते हैं। इनके पात्र किसान, जमींदार, मजदूर, क्लर्क, विद्यार्थी, अफसर, पंडित–पुरोहित, वकील, वेश्या, पतिव्रता, परित्यक्ता, विधवा–सधवा तथा समाज के संपर्क में आने वाले प्रायः सभी मध्यवर्गीय लोग हैं। इन पात्रों के चरित्र में आदर्शवादिता का खोखलापन, अवसरवादिता, कल्पनाजीविता, दोहरी मानसिकता, स्वार्थपरता, प्रदर्शनप्रियता, महत्त्वाकांक्षा, मिथ्याभाषण, घमंड एवं शोषण की प्रवृत्ति देखने को मिलती है। लेखक ने इनके इन सभी गुणों–अवगुणों को पूरी निष्ठा व ईमानदारी से चित्रित किया है। उनके पात्र कहीं भी नैतिकता का नकाब ओढ़े प्रतीत नहीं होते और न ही उनमें कृत्रिमता दिखायी पड़ती है, बल्कि कथावस्तु के माध्यम से अपना स्वाभाविक विकास करते हैं। उन्होंने जिन पात्रों का चयन किया है, उनके प्रति न्याय करने की कोशिश की है। उनके इस मध्यवर्गीय पात्रों के चरित्र की भावपूर्ण एवं संवेदनशील झांकी को हम निम्न उपन्यासों में इस प्रकार से देख सकते हैं। अपने प्रमुख उपन्यास 'सूखापत्ता' में उन्होंने मध्वर्गीय मानस के परिवेश एवं कमजोरियों का यथार्थ चित्रण किया है। इसके प्रमुख पात्र कृष्ण कुमार, मनमोहन, उर्मिला, गंगाधारी बाबू हैं। इन सभी के चरित्र में वैचारिक कशमकश, प्रदर्शनप्रियता, सामाजिक भीरुता, झूठ, घमंड, भाग्यवादिता एवं मानसिक विकृतियां भरी हुई हैं। उपन्यास नायक 'कृष्ण कुमार' एक ऐसा नवयुवक है, जो किशोरों में होने वाले सहज झुकाव, कल्पनाजीविता और आत्मप्रदर्शन की भावना से भरा हुआ है। वह योजनाएं तो बड़ी–बड़ी बनाता है, परंतु अंततः दब्बू, कायर, भगोड़ा और निर्णयहीन सिद्ध होता है। वह देश की आजादी के लिए जोश, जुनून और जज्बे के साथ लड़ने की बात तो करता है, परंतु अंग्रेजों से लड़ने व पिस्तौल खरीदने हेतु सेठ सूरजमल के यहां चीनी के बोरे की चोरी करता है और कहता है : ''चोरे चुराने का यह अर्थ था कि जो सेठ बेहिसाब मुनाफा कमाने के नाते शोषण और सरकार परस्ती का प्रतीक था, उसको नुकसान पहुँचाकर हमने ब्रिटिश सरकार पर आघात कियाय हम देशभक्त और क्रांतिकारी थे, इसका सबूत हमने दे दिया है।''[2]

कुटशब्दः मध्यवर्गीय पारिवारिक जीवन–मूल्य, अमरकांत के उपन्यास, सामाजिक युगबोध

प्रस्तावना
यह उसकी उम्र का कच्चापन ही है कि वह बोरे चुराने जैसे हास्यास्पद कार्य को भी महान क्रांतिकारी समझता है। कुछ ही दिनों में उसका देशप्रेम और क्रांतिकारिता हवा हो जाती है और वह उर्मिला के प्रेम में व्याकुल–बेचौन हो जाता है और उससे कहता है : ''उर्मिला मुझसे विवाह करोगी?.. क्यों नहीं जानती उर्मिला? तुम्हारे सिवाय कौन जान सकता है? यह सही है कि हम एक जाति के नहीं हैं। पर हमारे दिल एक हैं। सच कहता हूँ उर्मिला मैं समाज से लडूंगा और अगर नहीं मानेंगे तो हम समाज से अलग होकर रहेंगे।''[3]

इस प्रकार नायक जहाँ पहले देशहित में क्रांतिकारी बन विवाह न करने की प्रतिज्ञा करता है, वहीं उर्मिला के प्रेमजाल में फंसकर स्वयं इस प्रतिज्ञा को भंग करता है, परंतु अंतर्जातीय होने के कारण समाज तथा उर्मिला के माता–पिता उन्हें विवाह की अनुमति नहीं देते हैं। हालांकि उर्मिला अपने घर वालों की डांट–फटकार व यातनाओं के बावजूद अपने प्यार की कुर्बानी देने को तैयार नहीं होती, परंतु कृष्ण उसके मां–बाप की कद्र करके पीछे हट जाता है और उसे मां–बाप की पसंद के लड़के से शादी करने की सलाह देता है और कहता हैः ''नहीं उर्मिला, तुमसे यही प्रार्थना है कि तुम मुझे भूल जाओ।

तुम्हारे माता–पिता जैसा कहें वैसा ही करो। तुम्हारे खानदान और तुम्हारी बहनों की इसी में भलाई है। मैंने आखिरी फैसला कर लिया है। यह तुम मेरी प्रार्थना समझो या आज्ञा।... मैं अपने जीवन के कोमलतम, मधुतम, सुंदरतम अरमानों की चिता जलाकर लौट रहा था।''[4]

यद्यपि कृष्ण यह जानता है कि उर्मिला के पिता गंगाधारी बाबू सामाजिक ढकोसले के तहत उसके प्रेम में रोड़ा अटका रहे है, परंतु सामाजिक दबावों के चलते वह अपने प्यार का गला घोंटकर खुद गम में डूब जाता है। वह प्रेम के कारण आनंद पाता है. दुःख सहता है, संघर्ष करता है, सपना बुनता है, टूटता है, जुड़ता है, फिर टूटता है, लेकिन उसका सांस्कृतिक परिवेश उसे दब्बूपन से छुटकारा नहीं दिला पाता है। इस पर टिप्पणी करते हुए चंद्रगुप्त विद्यालंकार ने लिखा है : ''सूखापत्ता एक शक्तिशाली रचना है मगर उपन्यास का नायक प्रेम के संबंध में बहुत बड़ी दुर्बलता दिखाता है।''[5]

इस समाज में ऐसे बहुत से मध्यवर्गीय युवक हैं, जो बातें तो बड़ी–बड़ी करते हैं, परंतु उनको अमलीजामा पहनाने में पीछे हट जाते हैं। पात्र कृष्णकांत भी उन मध्यवर्गीय युवाओं का ही प्रतिनिधित्व करता है, जिसके अंदर कल्पनाजीविता भरी हुई है। रोजमर्रा के मामूली संघर्ष उसके अंदर हताशा का एक ऐसा जाल बुनते हैं, जो उसे भगोडा, डरपोक, कायर और स्वार्थ सिद्ध करते हैं। नायक कृष्ण में बुराइयों के बावजूद एक गुण भी है–आत्मालोचन की प्रवृत्ति। वह अपने किये हुए कार्यों पर पश्चाताप करता है और कहता है : ''मैं बहादुर हूँ? मैं त्यागी हूँ? सब झूठ है। गंगाधारी बाबू और मेरे पिता जी ने मेरी और उर्मिला की जो सराहना की, वह सब झूठ है। सब मुंह देखी बात है। मुझको देखकर कितनी खुश थी? खुशी से पागल हो गयी थी। मैं बहादुर नहीं मैं त्यागी नहीं, मैं कायर हूँ, मैं धोखेबाज हूँ। मैंने उर्मिला को धोखा दिया, मेरे जैसा तुच्छ और बुजदिल ढूंढ़े नहीं मिलेगा।''[6]

उसका यह आत्ममंथन एवं छटपटाहट बेहद प्राकृतिक है। उसकी इस प्रवृत्ति की प्रशंसा करते हुए परमानंद श्रीवास्तव ने लिखा हैः ''किशोर जीवन की तमाम बुराइयों के बावजूद कृष्ण में एक गुण भी है–आत्मालोचन की प्रवृत्ति, मुड़कर पीछे देखने की सशंक जागरूकता, जो उसे इस प्रकार के आत्मकथात्मक उपन्यास नायक होने की योग्यता प्रदान करता है।''[7]

सारांशतः यह कहा जा सकता है कि कृष्ण कुमार एक ऐसा ऊर्जाशील नवयुवक है जो अपने अंदर अनंत संभावनाएं समेटे हुए है, परंतु तथाकथित आदर्शों और अपनी वर्गीय परिधि से आगे नहीं जा पाता। वह अंतर्जातीय विवाह के जरिये सामाजिक रूढ़ि को खत्म तो करना चाहता है, परंतु उसके ये सारे सपने उसकी ही आंखों के सामने चकनाचूर हो जाते हैं। इसी प्रकार उर्मिला के पिता गंगाधारी बाबू हैं, जिनके चरित्र में प्रदर्शनप्रियता कूट–कूट कर भरी है। यद्यपि उनकी आर्थिक स्थिति इतनी अच्छी नहीं होती है कि वे अपने परिवार का भरण–पोषण भी ठीक ढंग से कर सकें, परंतु अपनी उपलब्धियों को बढ़ा–चढ़ाकर प्रस्तुत करते हैं। अर्थाभाव के कारण उनका घर बरसात के दिनों में गिरकर बह जाता है। फिर भी वह इस सच को छिपाने तथा अपना बड़प्पन दिखाने के लिए लोगों से कहते हैंः ''सच पूछो तो मकान गिरने से मुझे खुशी ही हुई है। उसको गिरवाकर बनवाने वाला तो था ही, फर्क इतना ही पड़ा कि जो चीज चार–छह महीने बाद होती, वह आज हो ही गयी।''[8]

उनका चरित्र सामाजिक भीरुता और स्वार्थ से पोषित है। वह तथाकथित सामाजिक मर्यादा एवं प्रतिष्ठा के चक्कर में अपनी बेटी का जीवन नारकीय बना देते हैं। पुरानी मान्यताओं एवं परंपराओं से चिपके होने के कारण ही वे बेटी उर्मिला को मनपसंद लड़के से विवाह की अनुमति नहीं देते हैं और कृष्ण कुमार से विनती करते हुए कहते हैं : ''पर यह शादी नहीं हो सकती, कृष्ण,.. मैं समाज की नहीं छोड़ सकता...इससे लड़ने की अब मुझमें ताकत नहीं है। मान लो, उर्मिला से तुम्हारी शादी कर भी देता हूँ, तो जानते हो मेरी दो छोटी लड़कियों की क्या हालत होगी? उनको कोई नहीं पूछेगा, और उनका भविष्य कैसा होगा, यह सोचकर मैं कांप उठता हूँ...फिर उन लड़कियों का क्या करूंगा? सिर्फ एक ही रास्ता बचा रहेगा कि हम सभी जहर खाकर खुदखुशी कर लें।... क्या तुम समझते हो कि उर्मिला की दूसरे से शादी करके मैं सुखी रह सकूंगा? जिंदगी भर यह बात मेरे दिल में कांटे की तरह चुभती रहेगी कि मैंने अपनी बेटी की जिंदगी बरबाद कर दी।''[9]

इस प्रकार की मजबूरी आज भी मध्यवर्गीय परिवारों में भरी पड़ी है। वे आज भी विवाह जैसे मांगलिक कार्यों में जातिबंधन, पारिवारिक मर्यादा एवं सामाजिक प्रतिष्ठा को तरजीह देते हैं और अपने लड़के–लड़कियों को मनपसंद अंतर्जातीय विवाह की अनुमति नहीं देते हैं। जिससे उनका जीवन नारकीय हो जाता है।

एक मध्यवर्गीय व्यक्ति या किशोरों में किस प्रकार की रौब व ऐंठन होती है। इसको लेखक ने पात्र मनमोहन के चरित्र के माध्यम से चित्रित किया हैः ''वह ऐंठकर चलते हुए पैरों के झटके देते, अगल–बगल थूकते जाते, मुंह से थूक नहीं निकलता था, बस वह थू कर देते, चारों ओर देखते जाते और बालों में हाथ फेरते जाते। ऐसा करने का उद्देश्य संभवतः यह था कि वह सिनेमा के वीर और सुंदर नायकों जैसे दीखें।''[10]

इस प्रकार इस पूरे उपन्यास में किशोरवय मानसिकता का बड़ा प्रामाणिक एवं सशक्त चित्र प्रस्तुत हुआ है। किशोर से युवा होते कृष्ण एवं मनमोहन शारीरिक सौष्ठव, लंठई के अतिरिक्त तमाम साहसिक कार्यों को भी अंजाम देते हैं, पर कहीं सफल नहीं होते। इसलिए उनके मन में तमाम विद्रूपताएं, कुंठा एवं क्षोभ भरा रहता है।

इसी प्रकार उपन्यास 'सुखजीवी' में अमरकान्त ने मध्यवर्गीय समाज की स्वार्थपरता, दुष्टता, अवसरवादिता एवं प्रदर्शनप्रियता को उजागर किया है। इसके प्रमुख पात्र दीपक, अहल्या, रेखा, विश्वनाथ तिवारी एवं उर्मिला हैं। दीपक कामुक, स्वप्नजीवी, प्रदर्शनप्रिय, स्वार्थी एवं अवसरवादी युवक है। उसके चरित्र में दोहरी मानसिकता, खोखलापन तथा हवसीपन दिखता है। क्योंकि वह अपनी पत्नी की उपेक्षा कर दूसरों की स्त्रियों से दोस्ती गांठता है और उन्हें पाने या सिर्फ एक बार छूने के लिए तरसता रहता है। हर समय वह केवल अपनी अतृप्त वासना को पूर्ण करने की योजनाएं बनाता रहता है। उसकी इस प्रवृत्ति से सभी दोस्त जलते व ईर्ष्या करते हैं। उन्हीं अजीज मित्रों में से विश्वनाथ तिवारी उनसे कहते भी हैं : ''मुश्किल तो यह है कि तुम अपने को बहुत काबिल और खूबसूरत तथा दूसरों को बेवकूफ और उनकी पत्नियों को व्याभिचारिणी समझते हो।....तुम इस तलाश में रहते हो कि कोई खूबसूरत स्त्री या लड़की मिले, जिससे तुम प्यार कर सकते। नहीं, नहीं, तुम नहीं, वह तुमसे प्यार कर सकती, लेकिन मित्र, सच मानो, तुम प्यार के नहीं व्यभिचार के भूखे हो।''[11]

निष्कर्ष

वस्तुतः दीपक बाहर से तो आदर्श एवं नैतिक है, परंतु भीतर विकृत एवं कुंठित है। वह अपने व्यक्तिगत स्वार्थ को साधने हेतु बीवी–बच्चों से छल करने में तनिक भी संकोच नहीं करता है बल्कि समय–समय पर अपनी भोली–भाली पत्नी अहल्या से रुपये ऐंठता है और ऐशो–आराम करता है। उसके चरित्र में स्वप्नजीविता लबालब भरी हुई है, वह अपने घर गाड़ी–बंगला, नौकर–चाकर सब–कुछ रखने की कल्पना तो करता है, परंतु उसके लिए उचित परिश्रम नहीं करता। अपने को ऊंचा दिखाने

तथा दूसरों की औरतों को आकर्षित करने के लिए वह झूठ, चाटुकारिता एवं परनिंदा का सहारा लेता है। एक दिन वह मौका देखकर मित्र आनंद के घर जाता है और उनकी पत्नी उर्मिला से घरेलू बातें करते हुए अपनी पत्नी की बुराई करता है। और कहता है : ''मेरी तो भाभी जिंदगी बरबाद हो गयी। मैंने सोचा था कि शादी–ब्याह करके कुछ सुख–शांति मिलेगी, लेकिन वह न होना था। मैंने शुरू से ही उसके सुख–दुःख का इतना खयाल रखा, लेकिन वह तो सोचती है जैसे मैं उसका नौकर हूँ। जब तक घर में रहता हूँ, सारा काम करता हूँ, दम लेने की फुर्सत नहीं, तिस पर न समय पर खाना, न समय पर नाश्ता।... आप लोग हैं, मौका जरूरत पड़ने पर बाजार हाट चली जाती हैं, बाहरी मदों से बोल–बतिया लेती हैं, कहीं भी अकेले जा सकती हैं।

संदर्भ

1. त्रिभुवन सिंह, हिन्दी उपन्यास और यथार्थवाद, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी, संस्करण 1965, पृ०–21
2. अमरकान्त, सूखापसा, राजकमल प्रकाशन प्रा.लि., नयी दिल्ली, संस्करण 2015, पृ०–52
3. वहीं, पृ०–155
4. अमरकान्त, सूखापसा, राजकमल प्रकाशन प्रा.लि., नयी दिल्ली, संस्करण 2015, पृ०–175
5. रवींद्र कालिया (संपा), अमरकान्त एक मूल्यांकन ('सूखापत्ता' शरत के श्रीकांत से प्रेरित है? – चंद्रगुप्त विद्यालंकार) सामयिक प्रकाशन, नयी दिल्ली, संस्करण 2015. पृ०–290
6. अमरकान्त, सूखापत्ता, राजकमल प्रकाशन प्रा.लि., नयी दिल्ली, संस्करण 2015, पृ०–176
7. परमानंद श्रीवास्तव, अमरकान्त रूपवाद के विरुद्ध वर्ष। पृ०–306
8. अमरकान्त, सूखापत्ता, राजकमल प्रकाशन प्रा.लि., नयी दिल्ली, संस्करण 2015, पृ०–117
9. वहीं, पृ०–171
10. अमरकान्त, सूखापत्ता, राजकमल प्रकाशन प्रा.लि., नयी दिल्ली, संस्करण 2015, पृ०–15
11. अमरकान्त, सुखजीवी, पृ०–56–57